SMT. DALIPARTHI UMAMAHESHWARI

Smt. Daliparthi Umamaheswari is an accomplished Harikatha artiste both in Telugu and Sanskrit languages with a nationwide reputation of being the first woman Harikatha artiste in Sanskrit.

2. Born on 21st May, 1960 in a traditional musician's family in a village named Machilipatnam, Andhra Pradesh, Smt. Umamaheswari started learning classical music from early childhood while simultaneously completing her secondary school education. Her father was the Asthana Vidwan of Vemulawada Raja Rajeswari temple of Telangana. She was mentored and motivated to pursue Harikatha by Sri SBPBK Satyanarayana Rao and Smt. SB Rajarajeswaramma. She learnt Harikatha from gurus Sri Kadali Veeradasu, Peddinti Suryanarayana Deekshithulu, Rajasekharam Lakshmipathi Rao, NCH Krishnamacharya and Vedimanic Narasimha Dasu. She was the disciple of Shri Nataraja Ramakrishna and trained in classical dance as well. She gave her first Telugu Harikatha - Gowrikalyanam at Sarvaraya Harikatha Pathasala which was her maternal institution. Her first Sanskrit Harikatha was Kalidasa Kumarasambhavam, which was staged at the prestigious Kalidasa Academy, Ujjain, Madhya Pradesh. Since then, her performance became a regular feature at Kalidasa Academy, where she presented almost all dramas and Kavyas of Kalidasa in Sanskrit. As an Honorary Principal of the Sarvaraya Harikatha Pathasala she trains and inspires many girl students to take up Harikatha as a profession.

3. Smt. Umamaheswari propagated the Harikathas of Adibhotla Narayana Dasu who is considered the father of Harikathas. She brought uniqueness to her performances by including many episodes from epics like Ramayana, Mahabharata and Bhagavatha. She had also written Harikathas on Ramana Maharshi, Sarada Devi Paramahamsa, Pottisreeramulu, Adikavi Nannayya and popularized their contribution. She proved to be a poet and writer of greater status. She is regular performer at Tirumala Tirupathi Devasthanams, Srisailam, Annavaram, Vemulawada etc. The crowning glory of her career was the performance at Badrinath in the year 1986 at the Jayanthi celebrations of Sri Adishankaracharya. She also went to Harvard University, USA and also Yale University to participate in Vedic conferences.

4. Smt. Umamaheswari had travelled wide and breadth to popularize her finesse of Harikatha to every nook and comer of the country and abroad. Her performance in the World Telugu Conference in Malaysia (1981), Vedic Conference at Harward University, USA (1993), Telugu Conference of ATA at Houston (1996), U.K in (1996), Singapore and Indonesia in 2003, Sultanate of Oman are noteworthy. Many cultural centers have recorded her Video and Audio to preserve this great art of Harikatha. Among such centers National Centre for performing arts, Bombay, Central Sangeet Natak Academy, New Delhi, Sahitya Kala Parishad, New Delhi, India International Centre, New Delhi and Gnana Pravaha, Varanasi are noteworthy.

5. Many awards and rewards had crowned her to recognize her great services to the art. She won the Central Sangeeta Nataka Akademi Puraskar, Lalitha Kala Puraskaram, Kalaratna Puraskaram, Mahila Navaratna Award, Durgabai Deshmukh Award, etc amongst many other awards. She was the first woman Harikatha artiste from Telugu states to secure a place in the Limca Book of Records. She was honoured the title Abhinava Matangi in recognition of her great services by Sringeri Sarada Peetadhipathi, Chitra Katha Saraswati by Ujjain Kalidasa Academy, Best Harikatha Demonstrator by Madras Music Academy, and Harikatha Kala Vahini by Telugu literary and cultural association. She is also a graded artiste in Doordarshan and All India Radio. She also won Lalithakala Puraskar by Sri Sarvaraya Educational Trust. Department of Culture, Andhra Pradesh honoured her with Ugadi Puraskaram.

श्रीमती दालिपर्ति उमामहेश्वरी

श्रीमती दालिपर्ति उमामहेश्वरी तेलुगु और संस्कृत दोनों भाषाओं में एक निपुण हरिकथाकार हैं, जिन्हें संस्कृत की पहली महिला हरिकथाकार होने की देशव्यापी प्रतिष्ठा प्राप्त है।

2. 21 मई, 1960 को आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम नामक गांव में एक पारंपरिक संगीतकार परिवार में जन्मी, श्रीमती उमामहेश्वरी ने अपनी माध्यमिक स्कूली शिक्षा के साथ–साथ बचपन से ही शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया था। उनके पिता तेलंगाना के वेमुलावाड़ा राजा राजेश्वरी मंदिर के अस्थाना विद्वान थे। श्री एसबीपीबीके सत्यनारायण राव एवं श्रीमती एसबी राजराजेश्वरम्मा ने उन्हें हरिकथा को अपनाने के लिए प्रशिक्षित और प्रेरित किया। उन्होंने गुरु श्री कदली वीरदासु, पेद्दिन्ति सूर्यनारायण दीक्षितुलु, राजशेखरम लक्ष्मीपति राव, एनसीएच कृष्णमाचार्य और वेदिमानिक नरसिम्हा दासू से हरिकथा सीखी। वह श्री नटराज रामकृष्ण की शिष्या थीं और उन्होंने शास्त्रीय नृत्य का प्रशिक्षण भी लिया था। उन्होंने अपनी पहली तेलुगु हरिकथा – गौरीकल्याणम अपनी मातृ संस्था सर्वराय हरिकथा पाठशाला में प्रस्तुत की। उनकी पहली संस्कृत हरिकथा कालिदासकुमारसंभवम थी, जिसका मंचन प्रतिष्ठित कालिदास अकादमी, उज्जैन, मध्य प्रदेश में किया गया था। तब से, कालिदास अकादमी में उनकी प्रस्तुति एक नियमित घटना बन गई, जहां उन्होंने कालिदास के लगभग सभी नाटक और काव्य संस्कृत में प्रस्तुत किए। सर्वराय हरिकथा पाठशाला की मानद प्रधानाचार्य के रूप में वह बहुत सी छात्राओं को हरिकथा को एक पेशे के रूप में अपनाने के लिए प्रशिक्षित और प्रेरित करती हैं।

3. श्रीमती उमामहेश्वरी ने हरिकथा के जनक माने जाने वाले आदिभोतला नारायण दासू की हरिकथाओं का प्रचार किया। उन्होंने रामायण, महाभारत और भागवत जैसे महाकाव्यों के कई प्रसंगों को शामिल करके अपनी प्रस्तुति को अनूठा बनाया। उन्होंने रमण महर्षि, शारदा देवी परमहंस, पोट्टिसरीरामुलु, आदिकवि नन्नय्या पर हरिकथाएं भी लिखीं और उनके योगदान को लोगों तक पहुंचाया। वह एक उच्च दर्जे की कवयित्री और लेखिका साबित हुईं। वह तिरुमाला तिरुपतिदेवस्थानम, श्रीशैलम, अन्नवरम, वेमुलावाड़ा आदि में नियमित रूप से प्रस्तुति देती हैं। उनके करियर का सबसे गौरवशाली क्षण वर्ष 1986 में श्री आदिशंकराचार्य के जयंती समारोह के अवसर पर बद्रीनाथ में उनकी प्रस्तुति थी। वह वैदिक सम्मेलनों में भाग लेने के लिए हार्वर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए और येल यूनिवर्सिटी भी गई हैं।

4. श्रीमती उमामहेश्वरी ने अपने हरिकथा कौशल को देश–विदेश के हरेक कोने में लोकप्रिय बनाने के लिए खूब यात्राएं कीं। मलेशिया में विश्व तेलुगु सम्मेलन (1981), हार्वर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका में वैदिक सम्मेलन (1993), ह्यूस्टन में एटीए का तेलुगु सम्मेलन (1996), ब्रिटेन (1996), सिंगापुर और इंडोनेशिया (2003), ओमान सल्तनत में उनकी प्रस्तुतियां उल्लेखनीय हैं। हरिकथा की इस महान कला को संरक्षित करने के लिए कई सांस्कृतिक केंद्रों ने उनके वीडियो और ऑडियो रिकॉर्ड किए हैं। ऐसे केंद्रों में नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, बॉम्बे, केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, साहित्य कला परिषद, नई दिल्ली, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली और ज्ञान प्रवाह, वाराणसी उल्लेखनीय हैं।

5. इस कला के प्रति उनके महान योगदान के मान्यता स्वरूप उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए। कई अन्य पुरस्कारों के अलावा, उन्हें केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, ललित कला पुरस्कारम, कला रत्न पुरस्कारम, महिला नवरत्न पुरस्कार, दुर्गाबाई देशमुख पुरस्कार आदि मिल चुके हैं। वह लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह पाने वाली तेलुगु की पहली महिला हरिकथा कलाकार थीं। शृंगेरी शारदा पीठाधिपति ने उन्हें "अभिनव मातंगी" की उपाधि से सम्मानित किया। उज्जैन कालिदास अकादमी द्वारा "चित्र कथा सरस्वती" की उपाधि, तेलुगु साहित्यिक और सांस्कृतिक संघ, न्यूयॉर्क द्वारा "हरिकथा कला वाहिनी" की उपाधि, मद्रास की संगीत अकादमी द्वारा "सर्वश्रेष्ठ हरिकथा प्रस्तुतकर्ता", लिम्का बुक्स ऑफ रिकाड्र्स द्वारा "संस्कृत हरिकथा में प्रथम महिला" कुछ उल्लेखनीय उपाधियां और सम्मान हैं जो उन्हें प्राप्त हुए। वह दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो की एक ग्रेडेड कलाकार भी हैं। श्रीसर्वराय एजुकेशनल ट्रस्ट ने उन्हें ललित कला पुरस्कार प्रदान किया, संस्कृति विभाग, आंध्र प्रदेश ने उन्हें उगाडी पुरस्कार से सम्मानित किया।